International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समकालीन हिंदी कविता में अभिव्यक्त राजनीतिक यथार्थ

- डॉ. प्रमोद कुमार द्विवेदी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
श्यामलाल महाविद्यालय (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय

एब्सट्रैक्ट

समकालीन हिंदी कविता में यथार्थ के विभिन्न पहलुओं की अभिव्यक्ति हुई है। आधुनिक काल में यथार्थ के विभिन्न पहलुओं में राजनीतिक यथार्थ का केंद्रीय स्थान है। राजनीति यथार्थ के अन्य सभी पहलुओं सामाजिक यथार्थ , आर्थिक यथार्थ , सांस्कृतिक यथार्थ आदि को बहुत प्रभावित करती है। समकालीन कविता अपने समय के राजनीतिक यथार्थ पर पैनी दृष्टि रखती है और उसे अभिव्यक्ति प्रदान करती है। समकालीन राजनीति का बड़ा सच यह है कि वह अपने मूल सरोकार जनहित से विरत होकर स्वहित में संलिप्त हो गई है। इसके कारण उसमें तमाम तरह की विद्रूपताएँ उत्पन्न हो गई हैं। स्वार्थपरकता , अवसरवादिता, संपन्न वर्गों का हित-पोषण, अपराधिक तत्वों से गठजोड़ , भ्रष्टाचार आदि समकालीन राजनीति के यथार्थ हैं। यह शोधपत्र समकालीन हिंदी कविता में इस राजनीतिक यथार्थ की अभिव्यक्ति का आकलन करने का एक प्रयत्न है।

कीवर्ड्स

समकालीन, कविता, राजनीति, सत्ता, यथार्थ

शोधपत्र

किसी भी युग की सार्थक कविता अपने समय के यथार्थ से साक्षात्कार अवश्य करती है। विशेषकर आधुनिककाल में यथार्थबोध रचनाकार के आधुनिक होने की अनिवार्य शर्त्त है। आधुनिक कविता अपने विकास के साथ -साथ यथार्थ पर अपनी पकड़ को पैनी करती गई है जिसका सबसे सशक्त रूप समकालीन कविता में दिखाई पड़ता है।

यथार्थ के विभिन्न पहलुओं में राजनीतिक यथार्थ का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है , बल्कि यदि हम यह कहें कि राजनीति आज यथार्थ के केंद्र में है तो यह गलत न होगा। आज राजनीति ही वह केंद्रीय शक्ति है जो हमारे समाज , अर्थतंत्र, धर्म, संस्कृति सभी को काफी प्रभावित और निर्धारित करती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1947 ई. में जब भारत ब्रिटिश पराधीनता से स्वंतत्र हुआ और भारत में लोकतंत्र की स्थापना हुई तो सामान्य जनता ने एक जननहितकारी राजनीति की अपेक्षा की। यथार्थ इसके विपरीत रहा। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय इतिहास राजनीतिक पतन का भी इतिहास है। समय के साथ उत्तरोत्तर यह पतन बढ़ता ही गया है। समकालीन कविता में भारतीय राजनीतिक यथार्थ की अभिव्यक्ति उसके विभिन्न पहलुओं के साथ हुई है।

एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में सत्ता और राजनीति का उद्देश्य देश और उसकी जनता का समग्र विकास ही हो सकता है। किंतु , सत्तालोलुपता भारतीय राजनीति का ऐसा यथार्थ है जिसपर जनता के हितों की बलि चढ़ती रही है। समकालीन कविता सत्ता और राजनीति के इस चरित्र की पहचान गहराई से करती है।

समकालीन कविता में सत्ता के उस रूप को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है जिसमें वह अमीर वर्ग के हितों की पोषक होती है और निर्धन-गरीब लोगों से अपना मुख या तो मोड़ लेती है या फिर अमीर लोगों के साथ गरीबों की लूट में शामिल हो जाती है। इस विडम्बनात्मक यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए मंगलेश डबराल लिखते हैं-

"हमारे शासक गरीबों के बारे में चुप रहते हैं-

शोषण के बारे में कुछ नहीं बोलते

अन्याय को देखते ही वे मुँह फेर लेते हैं

हमारे शासक खुश होते हैं जब कोई उनकी पीठ पर हाथ रखता है"1

समकालीन कविता यह लक्षित करती है कि देश में विभिन्न योजनाओं से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए आर्थिक समझौते तक में सरकारें देश की आम जनता के हितों का ध्यान नहीं रखतीं बल्कि उनका मुख्य लक्ष्य स्वयं को सत्ता में बनाए रखना होता है। अपनी सत्तालोलुप प्रवृत्ति के कारण वे आमजनहित विरोधी समझौते भी करती हैं। वे जनता को इस भुलावे में अवश्य रखती हैं कि वे देश और जनता के हित औ र सम्मान की कीमत पर कोई काम नहीं करेगी, पर यथार्थ इसके विपरीत होता है-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"कह कर तो गये हैं

देश और जनता की इज्जत की कीमत पर

नहीं करेंगे सौदा कोई या हस्ताक्षर

पता नहीं पास उनके कसौटी कौन-सी जनता की इज्जत के बारे में

जबकि सत्ता-लोभ में सनी लिसलिसाती उनकी सबकी इच्छा आँखें

और उन्हें क्या पता नहीं उनके ही बन्दर, सेवक, वर्दी

गामछे-तमगे वाले छोड़े कर देते हैं चाहे अब दो-कौड़ी की इज्जत

उस जनता की जो सचमुच में जनता है

जिसके बारे में कभी कुछ नहीं कर पाती सरकार हमारी

जो भी फिलवक्त अपने करोड़ों में से कुछ सैकड़ों की

आँखें तो टिकी होंगी ही उम्मीद भरी प्रधानमंत्री जी की यात्रा पर

कुछ की गड़ी होंगी उनकी दिल्ली वाली खाली कुर्सी पर

तो आशंका तो पैदा करती ही है

खाली होने के कारण"2

देश की जनता के विकास के तमाम वादे और योजनाएँ खोखली सिद्ध होती हैं। घोषित योजनाएँ या तो बनती ही नहीं हैं या फिर कागजी होकर रह जाती हैं। राजनीति और सत्ता आम जनता को गुमराह करती है। समकालीन कवि इस राजनीतिक यथार्थ के प्रति जनता को आगाह करते हुए लिखता है-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"टपकेंगे मधु की तरह

वीणा की तरह बजेंगे

मगर

नहीं

नहीं

नहीं

चुभलाना नहीं

सजाना नहीं

इतराना नहीं

विश्वास न करना उन पर

झूठे हैं वे

छली है, प्रपंची हैं, पाखण्डी हैं"3

यह सत्ता की पूंजीपति पोषक और आमजन विरोधी आर्थिक नीतियों का ही परिणाम है कि समाज में अमीर और गरीब के बीच की खाई चौड़ी होती गई है। सरकारें अपनी नीतियाँ बनाते समय निर्धन वर्गों के हितों को अनदेखा कर देती है। कवि अरुण कमल अपनी कविता 'पुराना सवाल' में गहरी संवेदना के साथ इस स्थिति को रेखांकित करते हैं-

"पहले खेत बिके

फिर घर जेवर

फिर बर्तन

और वो सब किया जो गरीब और अभागे

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तब से करते आ रहे हैं जबसे यह दुनिया बनी

इस तरह एक-एक कर घर उजड़े, गाँव उजड़े

और नगर महानगर बने

पर कोई नहीं बोलता ऐसा हुआ क्यों?

अब कोई नहीं पूछता यह दुनिया ऐसी क्यों है

बेबस कंगालों और बर्बर अमीरों में बंटी हुई"4

अपनी एक अन्य कविता में भी वे सत्ता की आर्थिक नीतियों पर प्रश्न उठाते हैं। 'सरकार और भारत के लोग' शीर्षक वाली इस कविता में वे चरमराई स्वास्थ्य सुविधाओं, लड़खड़ाती शिक्षा-व्यवस्था, निरंकुश बढ़ती महँगाई , वर्चस्वपूर्ण होते अपराधतंत्र तथा आमजन विरोधी आर्थिक नीतियों को तीक्ष्णता के साथ प्रस्तुत करते हैं। इस संदर्भ में इस कविता की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

"सरकार बिगड़े जमींदार की तरह

सारे कल कारखाने चम्मच कटोरी

बेच रही थी और अंत में

उसने बच्चों की दूध की बोतलें भी बेच दीं

तब एक माँ ने कहा-

सरकार जी

देखा करें कि संसद भी बेच दें

और आप भी वैसे रहें

जैसे हम यानी भारत के लोग

अब सरकार ही क्या करेगी रहकर?"5

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'भ्रष्टाचार' एक बड़ा समकालीन यथार्थ है। अपने हितों को साधने के लिये राजनीति इसको बढ़ावा देती है। सत्ता का काम भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाकर देश और जनता के हितों का पोषण करना होता है किंतु इसके विपरीत सत्ता अपने निहित स्वार्थों के लिये भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों को संरक्षण प्रदान करती है। भ्रष्ट नेताओं , प्रशासकों, व्यापारियों, पूंजीपतियों के गठजोड़ ने देश के विकास पर बहुत बुरा प्रभाव डाला है और आम जनता के जीवन को संकटग्रस्त करने का काम किया है। कवि चंद्रकांत देवताले इस यथार्थ को अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं-

"उनके मुँह से निकले वाणों ने

आग ही बरसायी

जीवन के लिए तरसती बस्तियों में

जनता वार्ड की तकलीफों को तो

देख ही नहीं पाती

आस्था और मद में पगी उनकी आँखें

वे मगन दीप-दीपन करते

दूरदर्शन के दरबार में ढूँढ़ते जगह

अपनी रोशनी के लिए

वे राष्ट्रीय अफरा-तफरी और अदृश्य लूट खसोट में

शरीक परम शक्तियों के मालिक।"6

कवि उदयप्रकाश इस भ्रष्ट्राचार को लक्षित कर समकालीन युग को 'लुटेरा अपराधी समय' कहते हैं-

"साथियो, यह एक लुटेरा अपराधी समय है

जो जितना लुटेरा है वह उतना ही चमक रहा है

और गूँज रहा है"7

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समकालीन भारतीय राजनीति का एक बड़ा स च राजनीति और अपराध का गठजोड़ है। राजनेता अपनी राजनीति चमकाने हेतु और येन-केन-प्रकारेण चुनावों में जीत हासिल करने हेतु अपराधियों को संरक्षण देते हैं और उनकी मदद लेते हैं और कई बार तो ऐसे अपराधी ही राजनेता बन जाते हैं। राजनीति और अपराध के इस गठजोड़ को समकालीन कविता उजागर करती है। अरुण कमल अपनी एक कविता में इस यथार्थ को अभिव्यंजित करते हुए लिखते हैं-

"जा चुका है सी.एम.

कडनैपर से मिल कर

जो इस गली के अपने पुश्तैनी मकान में

छिपा पड़ा था इन दिनों

एक टाँग तोड़ कर"8

सत्ता और राजनेताओं का चरित्र अधिकार और अर्थ के मोहजाल में फंसा **हुआ चरित्र हो गया है। इसके लिए वे हर प्रकार के छल-प्रपंच का सहारा लेते हैं। वे भ्रष्टाचार और अपराध को संरक्षण देते हैं तथा देश में जातिवाद को बढ़ावा देते हैं। इस स्थिति को अनावृत्त करते हुए सूरजपाल चौहान लिखते हैं-**

"हत्याएँ, चोरी, ठगी, लूटमार

और नेता मालामाल

जातियों का जाल

विदेशी कर्जे से

डूब चुका

बाल-बाल"9

राजनीति और अपराध के गठजोड़ को कुमार अंबुज अपनी कविता 'हासिल' में उसकी पूरी नग्नता के साथ अनावृत्त करते हैं। अपने विरोधियों का सफाया करने के लिये राजनेता अपराधियों से हाथ मिलाते हैं। यह भारतीय राजनीति का अत्यन्त दुखद और कटु यथार्थ है। कुमार अंबुज 'हासिल' कविता में लिखते हैं-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परांपरा से जानता हूँ जो सिंहासन पर हैं वे हत्यारे हैं

जो सर्वश्रेष्ठ हत्यारे होते हैं वे ही शासन करते आये हैं।

मुझे बड़ी फिक्र यह है कि इस स्थिति को पलटा कैसे जाये

जबकि रोज सब तरफ मुजरिम ही जश्न मना रहे हैं

और एक दिन उनके जश्न में

हम सब शामिल होते जाते हैं और वे भी

जो उनकी हत्या की सुपारी ले चुके हैं उसी जश्न में नाचते-गाते हैं

कि जल्दी क्या है खा-पीकर, नाच-गाकर मार देंगे

बाकी सोचते हैं जो जश्न मनाता है, इतना मिलनसार है

उसे उमदराज होना चाहिए

हर्ज नहीं अगर वे तुम्हारी हत्या कर दें"10

भारतीय राजनीति का एक बड़ा सच यह भी है कि राजनेताओं की कथनी और करनी में बहुत अंतर है। राजनेता स्वयं को जनता के सामने उनके हितौषी के रूप में प्रस्तुत करते हैं , लेकिन वास्तव में उनका उद्देश्य स्वयं के हितों का पोषण होता है। जनता गुमराह होती रहती है क्योंकि वे नेताओं के अभिनय को पहचान नहीं पाती है और उनसे झूठी उम्मीदें लगाए बैठी होती है। कवि इस स्थिति पर लिखता है-

"इस कमाल अभिनय पर

हैरत में हूँ

और डरा हुआ

सत्य बोलने पर

चुप थे सभी

असत्य के आते ही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

करतल ध्वनि से

भर उठा था सभागार"11

राजनेता सच्चाई को छुपाने के लिए तरह-तरह के हथकंडों का सहारा लेते हैं। दुनिया के सामने झूठे रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं। आंकड़े बदलने का खेल खेलते हैं। इस संदर्भ में चन्द्रकांत देवताले की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

"विश्व सण्डास सम्मेलन में क्यों नहीं

दिखाए गए शहरों के हाशियों, झुग्गी झोपड़ियों

और गाँवों की औरतों के मुसीबतों वाले दृश्य

सत्तर प्रतिशत के अधिक धरती

यानी गरीबों के मुकदर पर

कूड़ा करकट फेंकने वाले

मना रहे हैं अपनी बस्ती को अगाड़ी करने का महोत्सव

और बजट तैयारी और सपने दिखाने के दौरान ही

चमकती पोत पर डामर काट रहे हैं पहाड़"12

इस प्रकार समकालीन हिंदी कविता में भारत के राजनीतिक यथार्थ के विभिन्न पहलू अभिव्यक्त होते दिखाई देते हैं। भारतीय राजनीति में लोकतांत्रिक जीवन -मूल्यों का जो हश्र दिखाई देता है उसे कई समका लीन हिंदी कवियों ने अपनी कविताओं में उजागर किया है। किसी भी युग की कविता का यह धर्म है कि वह अपने युग के आम मनुष्य के पक्ष में खड़ी होकर अपने समय के यथार्थ को पहचाने और उसे अनावृत्त करे। समकालीन हिंदी कविता राजनीतिक यथार्थ के उद्घाटन के धरातल पर यह काम करती दिखाई देती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ

1. मंगलेश डबराल, नये युग में शत्रु, हमारे शासक, पृ. 24

2. चंद्रकांत देवताले, पत्थर फेंक रहा हूँ, अमरीका गए हैं प्रधानमंत्री, पृ. 154

3. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, शब्द और शताब्दी, शब्द, पृ. 29

4. अरुण कमल, मैं वो शंख महाशंख, पुराना सवाल, पृ. 36

5. वही, सरकार और भारत के लोग, पृ. 43

6. चंद्रकांत देवताले, पत्थर फेंक रहा हूँ, राष्ट्रीय अफरा-तफरी के महादृश्य में, पृ. 138

7. उदय प्रकाश, चंकी पांडे मुकर गया है, पृ. 32

8. अरुण कमल, पुतली में संसार, बिछावन, पृ. 33

9. सूरजपाल चौहान, क्यों विश्वास करूँ, हमारा हिंदुस्तान, पृ. 37

10. कुमार अंबुज, अमीरी रेखा, हासिल, पृ. 92-93

11. लीलाधर मंडलोई, लिक्खे में दुख, अभिनय, पृ. 64

12. चंद्रकांत देवताले, पत्थर फेंक रहा हूँ, सिंगापुर जैसे बनाने को बेताब, पृ. 28